214hi06

6

मूल आर्थिक गतिविधियां

उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण किसी अर्थव्यवस्था की मूल आर्थिक गतिविधियां कहलाती हैं। हमारी आवश्यकताओं की तुष्टि के उद्देश्य से वस्तु और सेवाओं के उत्पादन में दुर्लभ संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम आदि साधनों को जुटा कर वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन किया जाता है। साधनों को उनकी उत्पादक सेवाओं के लिये लगान, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ का भुगतान किया जाता है। उपभोग में, व्यक्तिगत अथवा सामूहिक आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से तुष्टि के लिये वस्तु और सेवाओं के प्रयोग को शामिल किया जाता है। भविष्य में उत्पादन क्षमता में वृद्धि करने के लिये प्रत्येक वर्ष विद्यमान पूंजीगत स्टाक जैसे मशीनें, इमारतें आदि में वृद्धि करने के लिये वर्तमान उत्पादन का कुछ भाग भविष्य के लिये बचा लिया जाता है। इस प्रकार, जितना उत्पादन होता है उसे या तो उपभोग अथवा पूंजी निर्माण अथवा दोनों में बांट दिया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- उत्पादन तथा उसके लक्ष्य को समझ पायेंगे;
- उत्पादन के साधन तथा साधन आय को जान पायेंगे;
- उपभोग के विषय में जान पायेंगे;
- उपभोग के लिये उत्पादित वस्तुओं से परिचित हो पायेंगे;
- उत्पादन तथा उपभोग, पूंजी निर्माण में कैसे सहायता करते हैं? समझ पायेंगे;
- आर्थिक गतिविधियों के चक्रीय प्रवाह को समझ पायेंगे।

6.1 उत्पादन

पिछले अध्याय में आप संसाधनों की दुर्लभता तथा चयन करने के विषय में पढ़ चुके हैं। इन दुर्लभ संसाधनों को वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करने में प्रयोग किया जाता है। उत्पादन का लक्ष्य हमारी आवश्यकताओं की तुष्टि करना है। इन उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को बाजार

में बेचा जाता है अथवा नाम मात्र की कीमत पर सरकार द्वारा जनता को प्रदान किया जा सकता है। इसलिये **उत्पादन को उपयोगिता का सृजन करने के रूप में परिभाषित किया जाता है।**

उत्पादन गतिविधियों में वस्तु और सेवाओं के बनाने को सम्मिलित किया जाता है। जो लोग इन वस्तु और सेवाओं को बनाकर बाजार में बेचते हैं, उन्हें उत्पादक कहते है। उत्पादक विभिन्न वस्तु और सेवाओं को बनाने के लिये कच्चे माल के साथ साधनों जैसे भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम को जुटाते हें। भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम उत्पादन के साधन कहलाते हैं। उत्पादक उत्पादन के साधनों के विभिन्न संयोगों का प्रयोग करके अधिकतम मात्रा में वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करने का प्रयास करते हैं। आइये, अब हम उत्पादन के इन साधनों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें।

6.1.1 भूमि

भूमि प्रकृति का उपहार है। इसमें समतल भू-भाग, पर्वत तथा पठार को शामिल किया जाता है। समतल भू-भाग कृषि तथा औद्योगिक गतिविधियों के लिये उपयोगी होता है। पर्वत समतल भू-भाग में नदियों के प्रवाह को बनाये रखते हैं तथा पर्यटन के लिये सुविधाएं प्रदान करते हैं। पठारों में खनिजों के भण्डार, जीवाश्म, ईंधन तथा जंगल पाये जाते हैं। खाद्यान्नों, सब्जियों, फलों आदि के लिये समतल भू-भाग में कृषि योग्य भूमि की आवश्यकता होती है। इसके साथ-साथ लोग पशुपालन, मत्स्य पालन तथा वान्यिकी आदि में भी संलग्न होते हैं, जिन्हें सम्बन्धित क्रिया कलाप कहते हैं। भारत में, ग्रामीण क्षेत्र को कृषि तथा सम्बन्धित क्रिया कलापों के लिये जाना जाता है। समतल भू-भाग में भूमि के कुछ क्षेत्र को उद्योग तथा शहरी क्षेत्र जैसे कस्बे तथा नगर स्थापित करने के लिये विशेष रूप से विकसित किया जाता है।

6.1.2 श्रम

साधारणतया **श्रम से अभिप्राय वस्तु और सेवाओं के उत्पादन में शारीरिक तथा मानसिक मानवीय प्रयत्नों से है।** खेतों में काम करने वाले व्यक्ति के बारे में कहा जा सकता है कि वह शारीरिक श्रम करता है जबकि पुस्तक के किसी लेखक के बारे में कहा जा सकता है कि वह मानसिक श्रम करता है। ऐसे लोग जो श्रम प्रदान करते हैं, मानवीय संसाधन कहलाते हैं। उत्पादन गतिविधियों के लिये कुशल तथा अकुशल दोनों प्रकार के श्रम की आवश्यकता होती है। केवल शारीरिक श्रम जैसे बोझा उठाना और बोझा उतारने में, खेत जोतने में किसी विशेष कुशलता की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु एक इंजीनियर, डाक्टर, अध्यापक, वकील, कारीगर, बिजली के सामान की मरम्मत करने वाला अथवा दर्जी आदि बनने के लिये व्यक्ति को शिक्षा और प्रशिक्षण के द्वारा कुशलता अर्जित करनी पड़ती है।

6.1.3 पूंजी

पूंजी से हमारा अभिप्राय उत्पादन में प्रयोग किये जाने वाली सभी मानव निर्मित वस्तुओं तथा सभी प्रकार के धन से है। पूंजी में मशीनों, औजारों, भवनों तथा पदार्थों आदि को सम्मिलित किया जाता है। जबकि भूमि एक प्राकृतिक संसाधन है, पूंजी एक मानव निर्मित संसाधन है।

पूंजी का उपयोग उत्पादन के अन्य साधनों जैसे भूमि और श्रम की कार्यक्षमता में वृद्धि करने के लिये किया जाता है। बेहतर सिंचाई की सुविधाओं तथा मशीनों के द्वारा भूमि की कार्यक्षमता को बढ़ाया जा सकता है। लेकिन, पूंजी उत्पादन का एक निष्क्रिय साधन है तथा कार्य करने के लिये बिना श्रम को लगाये इसका प्रयोग संभव नहीं है। पूंजी का एक सीमित जीवनकाल होता है तथा एक निश्चित अवधि के बाद इसका अप्रचलन हो जाता है। छोटे-छोटे औजार जैसे पेचकस, केलकुलेटर से लेकर भारी मशीन जैसे इंजिन, ट्रैक्टर, जलयान आदि सभी अचल (स्थिर) पूंजी के उदाहरण हैं, क्योंकि अनेक वर्षों तक इनका उत्पादन में उपयोग किया जा सकता है। अचल पूंजी में भवनों तथा भारी मशीनों को भी सम्मिलित किया जाता है। कार्यशील पूंजी में कच्चा माल जैसे सूत, मिट्टी, बीज, उर्वरक आदि को सम्मिलित किया जाता है जिनका उत्पादन प्रक्रिया में प्रयोग कर लिया जाता है।

6.1.4 उद्यम

भूमि, श्रम तथा पूंजी को उचित अनुपात में लेकर वस्तु और सेवाओं की उत्पादन प्रक्रिया को आरम्भ करने के लिये किसी को तो सूत्रपात करना ही पड़ता है। उचित प्रकार की भूमि, श्रम तथा पूंजी का चयन करने के लिये तथा उत्पादन की मात्रा के बारे में, साधन तथा कच्चे माल पर व्यय करने, उत्पादित माल को बेचने आदि के निर्णय के लेने के लिये वही उत्तरदायी होगा। उद्यम उत्पादन गतिविधि को संगठित करने की कला है। वह व्यक्ति जो उत्पादन प्रक्रिया के बारे में निर्णय लेता है, उस पर नियंत्रण रखता है तथा उत्पादन में निहित जोखिम तथा अनिश्चितताओं को वहन करता है, उद्यमी कहलाता है। उसे विद्वान, साहसी होना चाहिये तथा उसमें नेतृत्व के गुण होने चाहिये। उद्यमी का उद्देश्य दिये गये संसाधनों का उपयोग करके अधिकतम उत्पादन करना तथा अन्तिम वस्तुओं के विक्रय के लिये उचित प्रबंध करना होता है। वह उत्पादन के अन्य साधनों को भुगतान करने के लिये भी उत्तरदायी होता है।

वह, साधनों की उत्पादन में सेवाओं के बदले में श्रमिकों को मजदूरी, भूस्वामी को लगान तथा पूंजी के स्वामी को ब्याज का भुगतान करता है। इसी प्रकार, उद्यमी अपनी उत्पादक गतिविधि के लिये लाभ का अर्जन करता है। क्योंकि ये भुगतान-लगान, मजदूरी, ब्याज तथा लाभ साधनों को उनकी उत्पादन में सेवाओं के लिये प्राप्त होते हैं, इन्हें साधन आय कहते हैं।

पाठगत प्रश्न 6.1

1. नीचे कुछ साधनों की सूची दी गई है जिन्हें कमीजों के उत्पादन में प्रयोग किया जाता है। इन्हें प्राकृतिक संसाधन, मानवीय संसाधन, अचल पूंजी तथा कार्यशली पूंजी में समूहीकृत कीजियेः

   सूत, मशीनें, दर्जी, फैक्ट्री की भूमि, लकड़ी के दरवाजे, रंग, रंगने का पदार्थ, भवन, सिलाई की मशीन, टेलीफोन, क्रय-विक्रय प्रबंधक, विज्ञापन प्रबंधक, पैकिंग करने वाली मशीन, कैंची, बटन, बैंक ऋण, नकद मुद्रा।

2. निम्नलिखित में से कौन सी भूमि की विशेषता नहीं है:

(क) गतिशील (ख) प्रकृति का उपहार

(ग) मात्रा में सीमित (घ) अविनाशी

6.2 साधन आय

उत्पादन के साधन लोगों के पास होते हैं। भूमि का स्वामी भू-स्वामी, श्रम का स्वामी श्रमिक, पूंजी के स्वामी वे लोग जिन्होंने पूंजीगत वस्तुओं का उपार्जन किया है तथा उद्यम का स्वामी उद्यमी होता है। उत्पादन के साधनों के स्वामियों को उनकी उत्पादक सेवाओं के बदले में भुगतान किया जाता है। जब आप कोई भूमि का टुकड़ा किराये पर लेते हैं तो आप भूमि की सेवाओं के प्रयोग के लिये भू-स्वामी को लगान का भुगतान करते हैं। अतः किरायेदार भूमि की सेवाओं के लिये लगान का भुगतान करता है। श्रम से अभिप्राय श्रमिकों द्वारा दी गई सेवाओं से है। इससे अभिप्राय हाथ से कार्य करने वाले, तकनीकी कार्य करने वाले श्रमिक आदि सभी प्रकार के श्रमिकों से है। जब एक नियोक्ता को किसी श्रमिक की सेवाओं की आवश्यकता होती है तो वह उसकी सेवाओं के लिये भुगतान करने के लिये तत्पर रहता है। किसी श्रमिक को किराये पर लेने का वास्तव में अर्थ है उसकी सेवाओं को किराये पर लेना। जब एक ट्रैक्टर, बीज, मशीन आदि खरीदने के लिये किसी बैंक से ऋण लिया जाता है तो उस बैंक को ब्याज का भुगतान किया जाता है। अतः भू-स्वामियों को लगान, श्रमिकों को मजदूरी, पूंजीगत संसाधनों के स्वामियों को ब्याज तथा उद्यमियों को लाभ का भुगतान किया जाता है। चूंकि इन सभी को इनकी साधन सेवाओं के बदले में भुगतान किया जाता है, इन्हें साधन भुगतान कहते हैं तथा उनकी आय को साधन आय कहते हैं।

पाठगत प्रश्न 6.2

राम सिंह हरियाणा के एक गांव में कृषक है जिसके पास 2 हैक्टेयर भूमि है। वह और उसकी पत्नी रानी दोनों खेत में काम करते हैं। पहले इन्होंने अपनी भूमि पर केवल चावल उगाया था। अब वे बेहतर किस्म के बीज तथा सिंचाई का उपयोग कर दो फसलें उगाकर अपनी भूमि की उत्पादकता में वृद्धि करना चाहते हैं। वे दो फसलों चावल तथा आलू का उत्पादन करना चाहते हैं। इसके लिये उन्हें अच्छी किस्म के बीज तथा उर्वरक खरीदने के लिये धन की आवश्यकता है। चूंकि उनके पास पर्याप्त धन नहीं है, वे दोनों किसी अन्य के खेतों में श्रमिकों की भांति कार्य करते हैं। वे कुछ धन उर्वरक, बीज, पम्प सैट आदि पर व्यय करते हैं। कठिन परिश्रम करके वे किसी प्रकार चावल और आलू दोनों की अच्छी फसल उगाने में सफल हो जाते हैं। वे अपने खेतों में उगाये गये चावल तथा आलू में से कुछ अपने उपयोग के लिये रख लेते हैं तथा शेष को बेच देते हैं। अपनी फसलों को बेचने से उन्होंने 12000 रु. कमाये।

- इस कहानी में उत्पादन के साधनों को पहचानिये।
- इस उदाहरण में प्रयोग की गई पूंजीगत वस्तुएं क्या हैं?

6.3 उपभोग

उत्पादन का उद्देश्य उपभोग के लिये वस्तु और सेवाओं का उत्पादन करना है। **उपभोग गतिविधि में व्यक्तिगत अथवा सामूहिक मानवीय आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से तुष्टि के लिये वस्तु और सेवाओं के उपयोग को सम्मिलित किया जाता है।** अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि करने के लिये परिवार अनेक प्रकार की वस्तुओं जैसे साइकिल, फर्नीचर, टेलीविजन, कार, फ्रिज, खाद्यान्न, दूध, तेल, साबुन आदि तथा सेवाएं जैसे नाई, अध्यापक, डाक्टर, बैंक, बीमा कम्पनियों आदि की सेवाओं का क्रय करते हैं। सेवाओं के उत्पादन तथा उपभोग में समय का कोई अन्तराल नहीं होता है। सेवाओं का उत्पादन तथा उपभोग साथ-साथ होता है। जैसे ही उनका उत्पादन होता है, उनका उपभोग भी हो जाता है। जैसे, डाक्टर, वकील, अध्यापक आदि की सेवाएं। जैसे ही आप किसी डाक्टर के पास चिकित्सा के विषय में सलाह लेने जाते हैं, आप उसकी सेवाओं का उपभोग कर लेते हैं। वस्तुओं के बारे में ऐसा नहीं है। वस्तुओं के उत्पादन तथा उपभोग में समय का अन्तराल होता है। वस्तुओं का उपभोग तब मान लिया जाता है जब उनका क्रय किया जाता है। परन्तु कुछ दीर्घोपयोगी वस्तुएं जैसे फर्नीचर, साइकिल आदि अनेक वर्षों तक सेवाएं प्रदान करती रहती हैं, फिर भी जब उनका क्रय किया जाता है तो उनका उपभोग हो गया है, मान लिया जाता है।

6.4 पूंजी निर्माण

किसी अर्थव्यवस्था की तीसरी महत्वपूर्ण गतिविधि पूंजी निर्माण है। जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि साधनों के स्वामी अपनी उत्पादक सेवाओं के बदले में साधन आय प्राप्त करते हैं। वे अपनी आय के एक बड़े भाग को वस्तुओं और सेवाओं जैसे भोजन सामग्री, कपड़े, फर्नीचर, आवास, साइकिल, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर व्यय कर देते हैं। परन्तु वे अपनी सारी आय को इन वस्तुओं और सेवाओं पर व्यय नहीं करते हैं। वे अपनी कुछ आय को बचाकर उसे भविष्य के लिये बैंक में जमा कर देते हैं। उदाहरण के लिये, यदि किसी व्यक्ति की आय 500 रु. है और वह इस सारी आय को व्यय कर लेता है तो कुछ भी बचत नहीं है। इसके विपरीत, यदि वह अपने उपभोग पर कुछ प्रतिबंध लगाकर 300 रु. तक कर ले तो उसने 200 रु. की बचत की है और इसे वह भविष्य के लिये बैंक में जमा करने के लिये प्रयोग कर सकता है। बैंक इस मुद्रा का उपयोग किसी व्यवसायी को अपने व्यवसाय के विस्तार के लिये निवेश करने के लिये ऋण देने में कर सकता है। वर्तमान उपभोग पर रोक लगाकर ही पूंजी निर्माण किया जाता है। यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि बचत यदि व्यर्थ पड़ी रहे तो पूंजी निर्माण का हिस्सा नहीं बन सकती। यदि कोई व्यक्ति बचत करके अपने घर में उसे ताले में बंद कर देता है तो कोई पूंजी निर्माण नहीं होता है। यदि बची हुई मुद्रा को पूंजीगत वस्तुओं में लगा दिया जाए, केवल तब ही पूंजी निर्माण होता है जिससे भविष्य में उत्पादन तथा उपभोग सुगम हो जाता है। अतः वर्तमान उपभोग का त्याग किया जाता है तथा भविष्य में उत्पादन क्षमता में विस्तार करने के लिये प्रत्येक वर्ष विद्यमान पूंजीगत वस्तुओं जैसे मशीन, भवन आदि के स्टाक में वृद्धि करने में प्रयोग किया जाता है। **एक वर्ष में पूंजीगत वस्तुओं के स्टाक में ये वृद्धि पूंजी निर्माण अथवा निवेश कहलाती है।** इसी प्रकार, देश के उत्पादन के एक भाग को उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की तुष्टि करने में प्रयोग न करके उसे मशीन तथा उपस्कर के प्रावधान करने में लगाया जाता है जिससे उत्पादन होता रहे

और उसमें विस्तार किया जा सके। इस प्रकार, जितना भी उत्पादन होता है वह या तो उपभोग के लिये अथवा पूंजी निर्माण के लिये अथवा दोनों के लिये प्रयोग कर लिया जाता है।

ये तीनों गतिविधियां, उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण अन्तर्सम्बन्धित हैं। वस्तु और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि से उपभोग तथा पूंजी निर्माण के स्तर में वृद्धि होती है। उपभोग में वृद्धि लोगों के जीवन स्तर में सुधार का सूचक है तथा पूंजी निर्माण में वृद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि देश की आर्थिक संवृद्धि इस पर निर्भर होती है। अधिक उपभोग सम्भव है यदि अधिक उत्पादन हो तथा अधिक उत्पादन सम्भव है यदि अधिक पूंजी निर्माण हो। अतः देश को विकास के मार्ग पर आगे ले जाने में तीनों आर्थिक गतिविधियों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है।

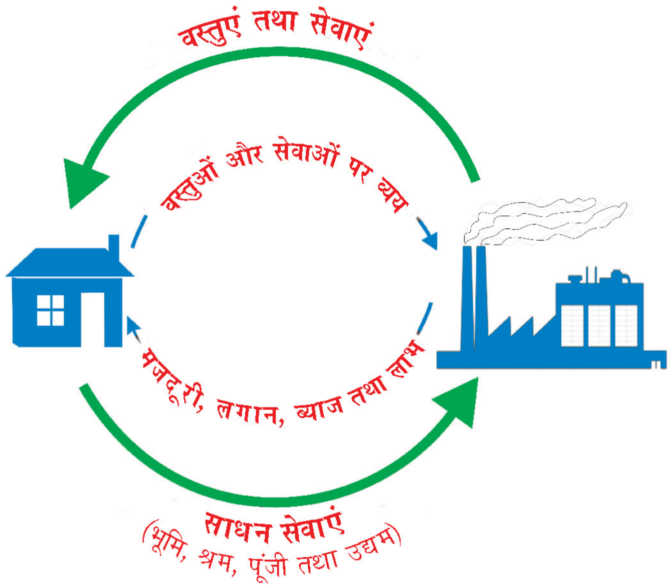

चक्रीय प्रवाह का चित्र

पाठगत प्रश्न 6.3

1. दीर्घीपयोगी वस्तुओं, एकल उपयोगी वस्तुओं तथा सेवाओं के दो-दो उदाहरण दो।
2. एक वर्ष में उत्पादन का उपभोग पर आधिक्य है। यह कहाँ जाता है?
3. उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण को कैसे सुगम बनाता है?

आपने क्या सीखा

- उत्पादन, उपभोग तथा पूंजी निर्माण, तीन आर्थिक गतिविधियां हैं।
- उत्पादन से अभिप्राय उपयोगिता का सृजन करने से है।

- भूमि, श्रम, पूंजी तथा उद्यम, ये चार उत्पादन के साधन हैं।
- फर्म द्वारा उत्पादन के साधनों को किये जाने वाले साधन भुगतान मजदूरी, ब्याज, लगान तथा लाभ हैं। साधन सेवाओं के स्वामियों के लिये इन्हें ही साधन आय कहते है।
- उपभोग से अभिप्राय व्यक्तिगत तथा सामूहिक आवश्यकताओं की प्रत्यक्ष रूप से तुष्टि के लिये वस्तु और सेवाओं के प्रयोग से है।
- पूंजी निर्माण एक समय अवधि में उत्पादन का उपभोग पर आधिक्य है।

पाठान्त प्रश्न

1. कृषि भूमि एक अचल संसाधन है। उसकी उत्पादिता को कैसे बढ़ाया जा सकता है?
2. श्रम की उत्पादिता में वृद्धि कैसे की जा सकती है?
3. उद्यमी के मुख्य कार्य क्या हैं?
4. पूंजी श्रम की उत्पादिता में कैसे वृद्धि करती है?
5. यदि किसी वर्ष में उत्पादन का उपभोग पर आधिक्य है, यह कहाँ जाता है? ऐसी दो वस्तुओं के भी नाम लिखिये जो अर्थव्यवस्था में पूंजी निर्माण में सहायता करती हैं।
6. तीन मुख्य आर्थिक गतिविधियों के नाम लिखिये ओर चित्र द्वारा उनमें अन्तर्सम्बन्ध प्रदर्शित कीजिये।
7. एक परिवार द्वारा साइकिल का क्रय है-

   (क) पूंजी निर्माण (ख) परिवार द्वारा उत्पादन

   (ग) उपभोग (घ) स्व-उपभोग के लिये उत्पादन
8. निम्नलिखित में से कौन से कथन सत्य/असत्य हैं?

   (क) पूंजी निर्माण देश की पूंजी में वृद्धि करता है।

   (ख) घर के बगीचे में सब्जी उगाना उत्पादन का भाग नहीं है।

   (ग) एक कृषक द्वारा, स्वउपभोग के लिये उत्पादन किया गया गेहूँ, उत्पादन का भाग है।

   (घ) एक अध्यापक द्वारा विद्यालय में पढ़ाना उत्पादन है।

   (च) एक छात्र द्वारा स्टेशनरी का प्रयोग उत्पादन है।

   (छ) एक परिवार के सदस्यों द्वारा अपने खेत में कुआँ खोदना पूंजी निर्माण का भाग है।

   (ज) एक ट्रक द्वारा किसी गांव से पड़ोस के कस्बे के बाजार में गेहूँ ढ़ोकर ले जाना उत्पादन का भाग है।

9. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये:
   (क) सरकार द्वारा सड़कों का निर्माण है .... (उत्पादन/पूंजी निर्माण)
   (ख) एक कृषक द्वारा ट्रैक्टर का क्रय .... का एक भाग है। (उत्पादन/उपभोग)
   (ग) किसी व्यक्ति द्वारा एक नये मकान का क्रय .... है। (उत्पादन/उपभोग)
   (घ) एक डाक्टर द्वारा किसी मरीज को देखना .... है। (उत्पादन/उपभोग)
   (च) एक छात्र का किसी विद्यालय में पढ़ना .... है। (उत्पादन/उपभोग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

पाठगत प्रश्न 6.1

1. प्राकृतिक संसाधन - फैक्ट्री की भूमि
   मानवीय संसाधन - दर्जी, क्रय-विक्रय प्रबंधक, विज्ञापन प्रबंधक
   अचल पूंजी - मशीने, लकड़ी के दरवाजे, भवन, सिलाई की मशीन, टेलीफोन, पैकिंग करने वाली मशीन तथा कैंची
   कार्यशील पूंजी - सूत, रंगने का पदार्थ, बटन, बैंक ऋण, नकद मुद्रा
2. (क)

पाठगत प्रश्न 6.3

1. दीर्घोपयोगी वस्तुएं - टेलीविजन, फ्रिज, कपड़े धोने की मशीन आदि
   एकल उपयोगी वस्तुएं - डबल रोटी, मक्खन, दूध, आटा
   सेवाएं - नाई (हज्जाम) की सेवाएं, अध्यापक की सेवाएं, डाक्टर की सेवाएं
2. ये पूंजी निर्माण में चला जाता है।
3. वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि से उपभोग तथा पूंजी निर्माण के स्तर में वृद्धि होती है। अधिक उपभोग केवल तभी संभव है जब अधिक उत्पादन हो तथा अधिक पूंजी निर्माण तभी संभव है जब उत्पादन उपभोग से अधिक हो।

मॉड्यूल 3: वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना

7. उत्पादन
8. लागत तथा आगम